राम झरोखे बैठ के

खिलौनों का खतरा

✍ गोपाल चतुर्वेदी

कभी 'गूँगी गुड़िया' कहकर डॉ. लोहिया जवाहरलालजी की बिटिया का मजाक उड़ाते थे। तब विज्ञान ने इतनी तरक्की नहीं की थी। आज के गुड्डे-गुड़िया चलते-फिरते, हँसते-बोलते हैं। चूँकि आयातित हैं, इसलिए अंग्रेजी में 'हैलो' और 'हाऊ डू यू डू' तक ही वे अभी सीमित हैं। हमारे कारीगर कुशल हैं। वैज्ञानिक भी किसी से कम नहीं हैं। कोई ताज्जुब नहीं कि हिंदी में वार्त्तालाप करनेवाले गुड्डे-गुड़िया भी बाजार में जल्दी नजर आने लगें। कल हम पप्पू के साथ बाजार गए तो वह एक बोलनेवाले गुड्डे की खरीद की जिद पर अड़ गए। पहले उन्होंने हमसे अनुरोध किया, 'पापा! हम सिर्फ यही खिलौना लेना चाहते हैं।'

हमने उनकी पसंद की दाद दी। सिपाही की वरदी पहने वह गुड्डा हमें भी अच्छा लगा। सड़क के सिपाही से अपनी रूह काँपती है। इस नन्हे सिपाही को तो डाँटा-धमकाया जा सकता है। हमारे मन में बचपन से वरदीवालों का डर बसा है। पप्पू इस खिलौनेवाले सिपाही से खेलें तो उन्हें आदत पड़ जाएगी। वह देश के एक निडर नागरिक बनेंगे। सत्ता के खंभों का कौन क्या बिगाड़ पाया है? पर जब अपनी गली का कुत्ता बिजली के खंभों पर टाँग उठाता है तब भी बच्चे-बूढ़े सभी को मजा आता है। हमें लगा कि एक नन्हे सिपाही को वक्त-बेवक्त डाँटकर हम अपने जी की भड़ास निकाल लेंगे। हमने इस 'वॉकी-टॉकी' सिपाही की कीमत पता की। कीमत सुनकर अपने होश फाख्ता हो गए। अपना महीने का आधा वेतन उड़ाकर हमने इस सिपाही को खरीदा भी तो खाएँगे क्या! अपना खयाल था कि बढ़ती प्रतियोगिता से बाजार में माल सस्ता हो रहा है। हमने दुकानदार से अपनी अवधारणा बताई। उसे अपना माल बेचना था। उसने सहमति में मुंडी हिलाई, 'आपको तो अर्थशास्त्र की खासी जानकारी है। दरअसल, यह सिपाही जापानी है। इसकी एक साल की गारंटी है। इसकी कीमत भी दीवाली से लेकर अब तक एक प्रतिशत घटी है। यों आप देशी सिपाही खरीद लें। वह इसकी आधी कीमत का है। बस बोलता नहीं है, हाथ बढ़ाकर माँगता है। इसमें बैटरी का खर्चा भी नहीं है। एक बार चाबी भर दीजिए, फिर माँगता ही रहता है।'

हम देशी खिलौना निर्माताओं की वास्तविकता की पकड़ पर दंग रह गए। दुकानदार ने हमें सिपाही ही नहीं, चाबी के बाबू, नेता, अफसर भी दिखाए। सब में एक समानता थी। वह न बोलते, न चलते, केवल माँगते थे। नेता का मॉडल थोड़ा भिन्न था। उसके सिर पर टोपी थी। निर्माताओं ने अपने कला-कौशल का प्रदर्शन उसके हाथों के निर्माण में किया था। उसके हाथ एक बार नमस्कार की अदा में उठते और उसके बाद याचक की मुद्रा में नीचे आकर जुड़ जाते।

बोलते-चलतेवाले विदेशी खिलौनों के मुकाबले कम कीमत होने के बावजूद अपनी जेब की हैसियत इन्हें खरीदने की नहीं थी। हमने दुकानवाले से अपनी दिक्कत बताई। उसने एक अच्छे सेल्समैन के नाते हमें पट्टी पढ़ाई, 'पैसे का मत सोचिए। हम किस्तों पर भी माल बेचने को तैयार हैं। सिर्फ बारह प्रतिशत अतिरिक्त ब्याज पड़ेगा। बैंक से लोन हम दिलवाएँगे। तीन साल की आसान किस्तें हैं। जरा अंदाज लगाइए, आपके साहबजादे कितने किस्मतवाले हैं। अभी से उन्हें नेता, अफसर, सिपाही खरीदने का अभ्यास हो गया तो भविष्य में कामयाबी उनके कदम चूमेगी।'

अपने बच्चे की सफलता में किसकी रुचि नहीं है? दूसरे माँ-बाप की तरह हम भी चाहते हैं कि पप्पू अच्छे स्कूल में पढ़ें। जितना हमारे माँ-बाप ने हमारे लिए किया है, हम उससे कुछ ज्यादा ही करने के इच्छुक हैं। अपनी हसरत है कि पप्पू के सही संस्कार पड़ें, जिससे वह इक्कीसवीं सदी के बदलते जीवन-मूल्यों से सामंजस्य बिठा सकें। पर आदमी सोचता कुछ और है, करता कुछ और। उधार लेने का अपना साहस नहीं हुआ। बाप-दादा ने ऐसी दकियानूसी ट्रेनिंग दी है कि उधार और पाप में हमें अधिक अंतर नहीं महसूस होता है। यों हम एक पाप करते हैं। पान की दुकान पर अपना उधार चलता है। वहाँ भी पहले लिखा था—'उधार प्रेम की कैंची है'। वक्त के साथ

पान की दुकान के मालिक लल्ला ने अपना नजरिया बदला और उस इबारत पर कालिख पुतवा दी।

हम तो यहाँ भी कर्ज लेने से बचते। पर हमारे घर की सरकार किसी भी 'सब्सिडी' के खिलाफ है। एक बार बस पर सवार किसी सज्जन पुरुष ने जेब पर हाथ मारकर हमारा पर्स उड़ा लिया। वह दिन है कि आज का दिन है, हमारी अनुशासनप्रिय पत्नी हमें महीने में पहली को बस के माहवारी टिकट का पैसा देती हैं। हमने कई बार उन्हें छोटे और बड़े गुनाह का फर्क बताया। आज तो केवल जेबकतरा है। अगर जेब काटकर पेट नहीं भरा तो कल वह वैकल्पिक धंधा तलाश करेगा। डाका डालेगा, बंदूक उठाएगा। क्या पता नेता बन जाए! पापी पेट एक ऐसी शै है तथा जिसके लिए आदमी कुछ भी कर सकता है। हमने पत्नी से प्रार्थना की। अपना रोज पर्स ले जाना समाज-सुधार और चरित्र-निर्माण कार्यक्रम का एक अनिवार्य अंग है। जेबकतरे को पर्स की राहत देना बिना जहर के साँप को कभी-कभार दूध पिलाने जैसा है। नहीं तो विवशता में वह विषैला बनेगा। समाज को क्या, पूरे देश को दादा, माफिया, नेता से बड़ा कोई खतरा मुमकिन नहीं है। हम हरचंद कोशिश के बाद भी उनके निर्णय के धनुष को न तोड़ पाए। अपने पल्ले पड़ गया। न हम राय हैं, न हमारे राय बनने की कोई संभावना है। लिहाजा हमने लल्ला से उधार न लेने की मर्यादा तोड़ दी। वहाँ भी हमने बाप-दादा की सीख न मानने का आसान बहाना ढूँढ़ लिया। पान की दुकान से हम कर्ज नहीं लेते हैं। बस लल्ला को स्थगित भुगतान करते हैं। कर्ज तो वह होता है जिसपर ब्याज लगे। न लल्ला ब्याज लेता है, न हम कर्ज लेते हैं।

हम अपने कर्ज न लेने के उसूल पर डटे रहे। रकम बड़ी थी। हमें लगा कि यह नैतिकता की निर्णायक घड़ी है। इससे पप्पू भी सीखेंगे कि उधार उनके परिवार की परंपरा नहीं है। उन्हें क्या पता कि हम पान की दुकान पर अपने ही सिद्धांत से पलायन कर चुके हैं। शराफत का यही दस्तूर है। कन्हैया चोरी-छिपे माखन खाते थे, हम पान खा लेते हैं। फ्रिज खोलकर कभी-कभार मिठाई भी उड़ा लेते हैं। पान जैसी छोटी चीजों को उधार जैसे बड़े उसूल से उलझाने की क्या दरकार है? हमने अपने अंतर की अपराध-भावना से पूरी तरह मुक्ति पाकर पप्पू को अपनी चादर में ही पैर पसारने की सलाह दी। अपना स्वार्थ साधने के लिए तरह-तरह के मुखौटे ईजाद करने में आदमी का सानी नहीं है।

आज के दुकानदार दूरदर्शी हैं। उन्होंने पप्पू का मूड भाँप लिया और गले में रूमाल, हाथ में पिस्तौल तथा एक कान में बुंदा, जींस, टी-शर्ट पहने आज के आदर्श छात्र का नमूना दिखाते वह बोले, 'आप यह खिलौना लीजिए। बेहद शिक्षाप्रद है। जैसे-जैसे आपके साहबजादे बड़े होंगे, यह और उपयोगी साबित होता जाएगा। देशी खिलौनों से भी इसकी कीमत कम है।'

पप्पू उसे देखते ही उत्साहित हुए, 'क्या यह पिस्तौल चलाता है?'

पप्पू नई पीढ़ी की होनहार संतान हैं। उन्होंने हमसे सीधा सवाल किया, 'पापा! आप शायद समझे नहीं! हम चादर की नहीं, खिलौनों की बात कर रहे हैं।'

आज के दुकानदार दूरदर्शी हैं। उन्होंने पप्पू का मूड भाँप लिया और गले में रूमाल, हाथ में पिस्तौल तथा एक कान में बुंदा, जींस, टी-शर्ट पहने आज के आदर्श छात्र का नमूना दिखाते वह बोले, 'आप यह खिलौना लीजिए। बेहद शिक्षाप्रद है। जैसे-जैसे आपके साहबजादे बड़े होंगे, यह और उपयोगी साबित होता जाएगा। देशी खिलौनों से भी इसकी कीमत कम है।'

पप्पू उसे देखते ही उत्साहित हुए, 'क्या यह पिस्तौल चलाता है?'

दुकानदार ने उन्हें सूचित किया कि यह बस खड़ा रहता है, हिलता-डुलता नहीं है।

पप्पू ने हिम्मत नहीं हारी, 'कोई और मॉडल दिखाइए, जो गोली दागता हो!'

दुकानदार ने अपनी असमर्थता जताई। हमारे प्यारे पप्पू ने बोलने-चलनेवाला गुड्डा लेने की जिद दोहराई।

हमने चैन की साँस ली। अहिंसक देश में हिंसक हथियार की लोकप्रियता से हम कुछ परेशान थे। मध्य वर्ग की मानसिकता का अनुकरण करते हमने मध्यम मार्ग अपनाया और दुकानदार से निवेदन किया, 'भैया! कोई और सस्ता खिलौना दिखाओ।'

इस बार दुकानदार ने किसी कोने में छिपा धूल-धूसरित फकीर की शक्ल का खिलौना निकाला, 'बस यह एक 'पीस' आया था और दो साल से ऐसा-का-ऐसा ही रखा है। इसका कोई खरीदार नहीं है। फालतू जगह घेर रहा है। आप चाहें तो इसे हम दस रुपए में आपको देने को तैयार हैं। आपके लिए खास रिआयत है। यह मिट्टी के मोल भी नहीं, मुफ्त ही समझिए।'

हमें गुड्डा भाया। हमारी जेब को भी वह पसंद आया। उसका चेहरा-मोहरा गांधी जैसा था। हमारे अंदर यकीन जागा। अगर यह घर में रहा तो पप्पू इससे प्रेरणा लेंगे। हमने खुशी-खुशी उसे खरीदने की हामी भरी और पप्पू से उनकी प्रतिक्रिया जानने की जुर्रत की। दस रुपए के फकीर को पप्पू ने अरुचि से देखा। उनकी आँखें चढ़ीं, नथने फड़फड़ाए। उनके विरोध के स्वर फूटे, 'सुबह-शाम आपको देखने की सजा क्या कम है, जो इस फकीर को भी देखें!'

इसके बाद हमारे कहने को बचा ही क्या था! हमने कनखियों से पप्पू की माँ को ताका। उनके चेहरे पर दिव्य संतोष और तृप्ति का भाव तैर रहा था। बेटे ने हमारी इज्जत का

सार्वजनिक जनाजा निकालकर उनकी शान में इजाफा किया था। वह वर्षों से यही कहना चाहती थीं, पर अभूतपूर्व आत्मनियंत्रण का परिचय देकर चुप रही थीं। हमने दुकान से निकलने का उपक्रम किया। पप्पू पहले तो गुस्से से काँपे, फिर यकायक दुकान के फर्श पर लोटने लगे। एक छोर से दूसरे तक जाने के अंतराल में एक कान-फोड़ू चीख के स्वर गूँजे, 'चलनेवाला गुड्डा हम लेकर रहेंगे।' पप्पू की माँ उन्हें लोटने-पोटने से रोकने के लिए दौड़ीं।

हम शर्म में डूबे, दुकान के बाहर लपके कि दुकानदार ने हमें रोका, 'बच्चा इतनी जिद कर रहा है तो कुछ ले ही दीजिए। 'लोन' में कुछ नुकसान नहीं होगा, हम आपको बीस प्रतिशत 'डिस्काउंट' देंगे।'

यह हमारा इम्तिहान था। सिद्धांतों के प्रति हम कितने प्रतिबद्ध हैं? क्या यह टुच्ची सी रिआयत और हमारे लख्ते-जिगर की अशोभनीय लोट-पोट हमें अपने सिद्धांत से डिगाने में समर्थ होगी? हमारी पत्नी अपने पप्पू को चिपकाए खड़ी थीं और हमें ऐसे घूर रही थीं कि नजरे निशाने से हमारे दिल के खजाने की तह तक बेध देंगी। इस सम्मिलित आक्रमण के सम्मुख हमने हथियार डाल दिए। पप्पू को सुनाकर हमने दुकानदार से वादा किया, 'हम उधार नहीं लेंगे, पर कल कैश देकर गुड्डा ले जाएँगे। कृपया इसे पैक कर दीजिएगा।'

बाहर निकले तो पत्नी ने डाँट लगाई, 'इतनी जरा सी बात पर नाटक करने की क्या दरकार थी? बेटे का मन रखने के लिए गुड्डा खरीदने से इनकार करनेवाले तुम दुनिया में पहले बाप होगे।'

हम उन्हें कैसे बताते कि अपनी आय वर्ग में बच्चे की जिद रखने के लिए इतना महँगा खिलौना खरीदनेवाले हम प्रथम और शायद अंतिम पिता हैं। हमारे घर की अमन-चैन की नाजुक इमारत पत्नी से बहस न करने की मजबूत नींव पर टिकी है। वह कहती हैं, हम सुनते हैं और घर की शांति बनी रहती है।

यों कल गुड्डा खरीदने का हमारा नेक इरादा सिर्फ इरादा ही रहनेवाला था। गुड्डे की खरीद भविष्य निधि के खाते से निकासी पर निर्भर थी। भविष्य निधि का पैसा केवल कहने को अपना है। उससे रकम निकालने में सैकड़ों झंझट हैं। हमने निश्चय कर लिया था कि पप्पू के जनेऊ के झूठ से इस बार गुड्डे की खरीद की राशि निकलेगी। इसमें तीन-चार दिन लगना तो मामूली सा मसला है। कौन जाने, पप्पू का इस बीच मन बदल जाए।

हम शाम को मुरारी से अपनी व्यथा बयान कर जी हलका करने लगे तो उन्होंने हमें ज्ञान दिया, 'यह तो सिर्फ इब्तदा है, आगे-आगे देखिए होता है क्या! आज के विज्ञापनदाताओं का पूरा ध्यान देश की नई पीढ़ी पर केंद्रित है। वे जानते हैं कि बच्चों ने जिद पकड़ ली तो उनके माँ-बाप को घुटने टेकने-ही-टेकने हैं। बच्चों को यदि कोई चीज भा गई तो उसकी माँग बढ़ना लाजिमी है। अभी तो बर्गर, टॉफी, जूते, शर्ट, टोपी, पतलून की बारी आनी बाकी है।'

मुरारी की भविष्यवाणी से हम ऐसे हड़के कि हमने लल्ला की दुकान पर जाकर चार गुलाब जामुन खाए, तब जाकर साँस में साँस आई। अपना अनुभव है, अवसाद की 'एलर्जी' का रामबाण इलाज मिठाई की दवाई है। लोग अज्ञान से पीड़ित हैं। मिष्टान्न एनर्जी का स्रोत है। दफ्तर में लोगों को हमारे बरदाश्त करने की कूबत पर ताज्जुब है। हमारे एक बड़े बाबू तो हमपर चिल्लाते-चिल्लाते चल बसे। जैसे ही हमपर चीखते, हम जेब से बेसन का लड्डू निकालकर मुँह में रखते। वह और चीखते, हम चुपचाप जीभ से अंतरात्मा में उतरते लड्डू के रस में डूबते। लड्डू के कारण हनुमानजी हमारे प्रिय आराध्य हैं। हम हफ्ते में एक-दो बार उनके दर्शन जरूर करते हैं। उनके प्रसाद के लड्डू हर संकट में हमारा साथ देते हैं। पर वर्तमान संकट तो लड्डू के निदान से परे है। खाते समय, गुलाब जामुन की कृपा से, रोज की तुलना में हमने कम खाया। पत्नी ने हमदर्दी जताई। हमने शहादत की मुद्रा अपनाई, 'कम खाना और गम खाना ही हमारी नियति है।'

खाते वक्त की उदास शक्ल बरकरार रखकर हमने फिर मिठाई की दुकान का रुख किया। जब हजार-दो हजार का गुड्डा पप्पू के लिए लेना है तो अपने ऊपर भी सौ-पचास फूँकने में क्या हर्ज है! हमने नया प्रयोग किया। मलाईदार केसरिया दूध में रबड़ी के तड़के का अलौकिक आस्वाद है। इस नए तजुरबे से एक फायदा हुआ। पाचन के नशे में हम ऐसा डूबे कि बिस्तर पर लेटते ही आँख लग गई।

सोते-सोते हमें खिलौनों की वह दुकान पूरी दुनिया-सी दिखने लगी। खिलौने आपस में इनसानों का मजाक उड़ा रहे थे, 'कैसे मूर्ख हैं ये इनसान! अपने को 'गॅलिवर' समझते हैं और हमें 'लिलीपुट' का रहनेवाला। यह इतना भी नहीं जानते हैं कि इनपर एक दिन हमारा ही शासन होने वाला है। हमारी चलती-फिरती, हँसती-बोलती, भाषण करती गुड़िया इनका नेतृत्व करेगी। हमारा मार्च करता सिपाही घर में घुसकर इनके सैनिकों की सुरक्षा में सेंध लगाएगा। ये पैसे देकर हमें खरीदेंगे। हम ऐश करेंगे, इनका दीवाला निकलेगा।'

सोते-सोते हमें लगा कि आठ-दस सिपाही हमारे सीने पर सवार हैं। हम जाड़े में पसीने-पसीने हो गए। हमारी चीख निकल गई। पत्नी उठ गईं। उन्होंने हमें पानी पिलाया। उनसे तौलिया माँगकर हमने चेहरा पोंछा। उन्होंने कहा, 'भूखे सोने से यही होता है।'

हम उन्हें कैसे बताते कि अति भोज के बाद देश का सोचने से दिल का दौरा शर्तिया पड़ता है। वह तो हमारे मन में सिर्फ खिलौनों की दुकान के आयातित खिलौनों का ही खयाल छाया रहा। शायद इसीलिए सिर्फ पसीना आया, दिल का दौरा नहीं पड़ा। कोई भरोसा नहीं है कि कल क्या हो! चलती-फिरती, हँसती-बोलती, भाषण देती गुड़िया और गुड्डे अगर ऐसे ही चालू रहे तो कुछ भी मुमकिन है—सिर्फ हमारे लिए ही नहीं, देश के लिए भी। □

सी-४/७४, दूसरी मंजिल,
सफदरजंग डेवलपमेंट एरिया,
नई दिल्ली-११००१६